International Conference – 2025: Developed India @ 2047
Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025
Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

राष्ट्रनिर्माण में आदिवासी विमर्शों की भूमिका (संदर्भ- हिन्दी साहित्य)

सचिन तोपनो
सहायक प्राध्यापक, गोस्सनर महाविद्यालय, रांची
Sachintopno76@gmail.com

बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशकों में हमारे देश में नए सामाजिक आंदोलनों का उदय हुआ। सामाजिक राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक सभी स्तरों पर हिस्सेदारी और अपने अधिकारों की मांग को लेकर हाशिए की स्थितियों का संघर्ष और स्वर उभरे हैं। वर्ग, जाति, वर्ग, लिंग, स्थानिकता, सांस्कृतिक पहचान, विस्थापन आदि को आधार बना कर नई अस्मिताएं सामने आई है। उन्होंने समानता, न्याय, हिस्सेदारी और आत्मसम्मान के लिए प्रतिरोध आंदोलन और संघर्ष को अपना मुक्ति पथ घोषित किया है। अस्मिता जब संकट संकट में होती है तभी विमर्श की स्थिति उत्पन्न होती है। उपेक्षित वर्ग को अपनी पहचान बनाए रखने और अपने दमित वंचित होने के अनुभव से ऊपर उठने के लिए विमर्श की आवश्यकता होती है। शैक्षिक व अन्य सैद्धांतिक क्षेत्रों में विमर्श ने एक सामाजिक, सांस्कृतिक पारिभाषिक शब्दावली का रूप ग्रहण कर लिया है। उत्तर आधुनिक कालखंड में विमर्श' शब्द का अर्थ संकेत भाषण, प्रवचन और बातचीत से आगे निकलकर विशिष्ट वैचारिक स्थापनाओं पर केन्द्रीत हो गया है।

प्रत्येक वर्ग समुदाय की अपनी, अस्मिता और अपना अस्तित्व है। उन्हीं की पहचान और विशिष्ट उपादेयता को स्थापित करने के अर्थ में विमर्श का प्रयोग किया जाता है। जब भी समाज में रहने वाले किसी भी वर्ग या समुदाय के प्रति सामाजिकों का रवैया उदासीन हो, उनकी दृष्टि अनुत्साहवर्धक हो, उन्हें वह न मिले जो उनका प्राप्य हो ऐसी स्थिति में समाज और साहित्य में विमर्श का दौर चलता है।

किसी भी राष्ट्र के विकास में उस राष्ट्र विशेष के सभी वर्गों, समुदायों की भागीदारी होती है। किसी समुदाय की उपेक्षा करना प्रगति में बाधक बन सकता है। विकास के नाम पर समुदाय विशेष की अस्मिता, अस्तित्व को खतरे में डालना, उस राष्ट्र की सांस्कृतिक विविधता की पहचान को भी खतरे में डालता है।

समकालीन हिन्दी साहित्य स्त्री-विमर्श और दलित विमर्श से आगे बढ़ने की कोशिश कर रहा है और हिंदी में आदिवासी विमर्श सबसे नया विमर्श है। आज 21वीं शताब्दी में सांस्कृतिक श्रेष्ठता की सोच ने आदिवासियों को उपेक्षित किया है। जिसके विरोध में इनकी अस्मिता की सुरक्षा और समाज में इनकी अहमियत पर विश्वास करने का संकल्प लेकर आदिवासी साहित्य विमर्श के स्वर सुनाई दे रहे हैं। असल में जनजातीय समुदाय की अवधारणा जो सरकार और समाज ने बना रही थी जो मानक, सिद्धांत और दृष्टिकोण सरकार ने स्थापित किए थे। उनमें जनजातीय समाज के मुद्दे समा नहीं पाए। इन्होंने अपने साथ होने वाले शोषण के लिए अपनी खास अस्मिता को कारण बताया। शोषण और संघर्ष का आधार अस्मिताएँ बनीं इसलिए इसे अस्मिताय भी कहा गया। वंचितों के शोषण के खिलाफ मुहिम उठ खड़ी हुई और इस मुहिम में सामाजिक, राजनीतिक, आंदोलन के अलावा साहित्यिक आंदोलन ने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। आदिवासी लेखन को नयी धार मिली और साहित्य की मौजूद धारा में शामिल होने के लिए अनवरत लेखन होने लगा।

आदिवासी साहित्य विमर्श क्यों?

आदिवासी विमर्श आदिवासी अस्मिता, उसके अति संबंधी संकटों और उसके खिलाफ जारी प्रतिरोध का साहित्य है। यह देश के मूल निवासियों के वंशजों के प्रति भेदभाव का विरोधी है। यह जल जंगल जमीन और जीवन की रक्षा के लिए आदिवासियों के आत्मनिर्णय के अधिकार की मांग करता है।

आदिवासी साहित्य विमर्श के ऐतिहासिक और मौलिक कारण हैं। आदिवासी विमर्श की बात करने से आदिवासियों के बारे में जानना आवश्यक है। उनके दर्श संस्कृति, परंपरा, मान्यताओं भाषाओं के बारे समझना आवश्यक है। बहुत से लेखक हैं जिन्होंने आदिवासी, समाज को गहराई से जाने बिना लेखन किया।

उनकी कृतियों में आदिवासी समाज की आत्मा नहीं होती। अधिकतर लेखक आदिवासी विमर्श के नाम पर मात्र उनकी विस्थापन की समस्या उठाते है। दूसरी तरफ वामपंथी भी विस्थापन का सवाल इसलिए उठाते हैं क्योंकि उन्हें बहुराष्ट्रीय कंपनियों या स्टेट से नफरत है अन्यथा आदिवासियों की जमीन तो पिछले डेढ़ सौ सालों से जा रही है कानूनी सुराखों की वजह से कानून का पालन न करने की वजह से।

International Conference – 2025: Developed India @ 2047
Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025
Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

आदिवासी साहित्य विमर्श ने बहुत सारे मुद्दे अभी तक ठीक से उठाए ही नहीं गए है। जल, जंगल, जमीन से जुड़े प्रश्न तो है ही परंतु कुछ अन्य तत्व भी है जो आदिवासी अस्तित्व से जुड़े है। आदिवासी संस्कृति का सवाल आदिवासियों की भाषाओं का सवाल उनके धर्म का सवाल कभी विमर्श का हिस्सा बना ही नहीं आर्थिक उदारीकरण के फल स्वरुप आदिवासियों पर हुए शोषण की बात तो होती है पर उनके अस्मिता से जुड़ी भाषा और संस्कृति का प्रश्न नहीं उठाता।

सुनीति कुमार चटर्जी (भाषाविद) ने भविष्यवाणी की है कि आदिवासी भाषाएँ दो-तीन सौ सालों में खत्म हो जाएगी। इसका जवाब आदिवासी विमर्श को देना है कि क्या ये भाषाएं खत्म हो जाएगी या आदिवासियों के जीवन में उनकी संस्कृति के लिए इसका कोई महत्व है। आदिवासी विमर्श को बड़ी गंभीरता से सोचने की जरूरत है कि अपनी भाषा के बिना वो अपनी संस्कृति को कब तक बचा कर रख सकते है? भौतिकवाद ने आदिवासियों के समक्ष अस्तित्व एवं अस्मिता के विकट प्रश्न को जन्म दिया जिसमें यदि वे अपनी सांस्कृतिक पहचान को अहमियत देते हैं तो उनका अस्तित्व खतरे में पड़ सकता है और अगर वह अपने अस्तित्व को प्राथमिकता देते हैं तो उनकी सांस्कृतिक पहचान खतरे में पड़ सकती है । यूनेस्को ने भारत की 196 जन-भाषाओं के अस्तित्व को खतरे में बतलाया जिनमें अधिकांश भारत की आदिवासी समुदाय की भाषाएँ है। यही वह पृष्ठभूमि है जिसमें आदिवासियों की अस्तित्वनात एवं अस्तित्वागत बेचैनी ने एक पृथक एवं स्वतंत्र धारा के रूप में आदिवासी विमर्श की संभावनाओं को बल प्रदान किया।

आदिवासी साहित्य की अवधारणा -

आदिवासी साहित्य से अभिप्राय उस साहित्य से है, जिसमें आदिवासी जीवन और समाज उनके दर्शन के अनुरूप अभिव्यक्त होता है। आदिवासी साहित्य के लिए विश्व में अलग- अलग नामों का प्रयोग हुआ है। 'नैटिव अमेरिकन लिटरेचर' 'कलर्ड लिटरेचर, स्लेव लिटरेचर', 'ब्लैक लिटरेचर एबोरिजनल लिटरेचर, 'इंडीजिनस लिटरेचर' 'टाइबल लिटरेचर' आदि नामों से जाना जाता है।

हिंदी भाषा में इसके लिए सामान्यतः आदिवासी साहित्य का प्रयोग किया जाता है। आदिवासी साहित्य की अवधारणा को लेकर तीन तरह के मत है-

- आदिवासियों के बारे में लिखा गया साहित्य
- आदिवासियों द्वारा लिखा गया साहित्य
- आदिवासी दर्शन पर आधारित साहित्य

International Conference – 2025: Developed India @ 2047
Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025
Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

पहली अवधारणा गैर-आदिवासी लेखकों द्वारा लिखे गए आदिवासी साहित्य की है। दूसरी अवधारणा उन आदिवासी साहित्यकारों की है जो जन्मना और स्वानुभूति के आधार पर आदिवासियों द्वारा लिखे साहित्य को ही आदिवासी साहित्य मानते है। अंतिम अवधारणा उन लेखक की है जो आदिवासियत के तत्वों का निर्धारण करनेवाले साहित्य को ही आदिवासी साहित्य के रूप स्वीकार करते है।

आदिवासी लेखन और हिन्दी साहित्य

हिन्दी का विस्तार भारत में ही नहीं बल्कि भारत से बाहर विदेशों में भी हो चुका है। आज बड़े पैमाने पर देश-विदेश में हिन्दी साहित्य रचा जा रहा है। केवल हिन्दी भाषी ही नहीं, ,गैर हिन्दी भाषी भी हिन्दी साहित्य रच रहे हैं। हिन्दी में अस्मितावादी विमर्शों में आदिवासी लेखन विमर्श सबसे नवीन है। आज वर्षों से हाशिए पर रखे गए आदिवासी समुदाय को हिन्दी साहित्य में स्थान मिल रहा है। हिन्दी साहित्य के संदर्भ में आदिवासी साहित्य विमर्श की बात करें तो आदिवासी और गैर-आदिवासी दोनों ने ही कलम चलायी है।

गैर-आदिवासियों द्वारा आदिवासी साहित्य विमर्श -

गैर-आदिवासी साहित्यकारों ने आदिवासी जीवन और समाज को साहित्य के माध्यम से अभिव्यक्त किया है, जैसे- रमणिका गुप्ता, संजीव, राकेश कुमार सिंह, महुआ माजी, रणेन्द्र आदि । इन्होंने हिंदी साहित्य के माध्यम से आदिवासी अस्मिता को स्वर देने का प्रयास किया है।

आदिवासियों द्वारा आदिवासी साहित्य विमर्श -

पिछले दो दशकों में हिंदी संसार में आदिवासी लेखकों, विशेषकर झारखण्ड क्षेत्र के लेखकों ने अपनी पहचान बनाई है। आज आदिवासी कलम की धार क्षेत्रीय और राष्ट्रीय स्तर तक असरदार बन चुकी है। अनुज लुगुन, वंदना टेटे, निर्मला पुतुल, जसिंता केरकेट्टा महादेव, टोप्पो, शिशिर टुडु सरीखे साहित्यकार हिन्दी साहित्य में आदिवासियों की अस्मिता, अस्तित्व के प्रश्न को स्वर दे रहे हैं।

International Conference – 2025: Developed India @ 2047
Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025
Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

आदिवासी लेखन विविधताओं को अपने अंदर समेटे है। समृद्ध, मौखिक साहित्य परंपरा का लाभ भी आदिवासी साहित्यकारों को मिला उपन्यास, कहानी, कविता , नाटक रिपोर्ताज, आदि विधाओं में साहित्यकारों ने आदिवासी जीवन और समाज का चित्रण प्रस्तुत किया।

आदिवासी अस्मिता और हिन्दी कविता-

आरंभिक और ज़्यादातर आदिवासी साहित्य वाचिक परंपरा का हिस्सा रहा है, इसलिए यह गीत या कविता के माध्यम से हमारे सामने आता है। निर्मला पुतुल ने 'नगाड़े की तरह बजते शब्द के जरिए अपनी प्रभावी उपस्थिति दर्ज की है। अबोधित उलगुलान में अनुज लुगुन ने आक्रोश व क्रांति को लेखनीबद्ध किया है। पिछले वर्षों में ग्रेस कुजूर, महादेव टोप्पो, सोतीलाल, निर्मला पुतुल की कई कविताएँ खूब सराही गई।

हिन्दी उपन्यासों के संदर्भ में आदिवासी विमर्श -

समकालीन हिन्दी उपन्यासों में आदिवासियों की जीवन प्रणाली को अत्यंत संवेदना के साथ अभिव्यक्ति मिली है। वाल्टर भेंगर की सुबह की शाम, रणेन्द्र की 'ग्लोबल गाँव का देवता, पीट्र पाल एक्का के 'जंगल के गीत', हरिराम मीणा के धूणी तपे तीर। को काफी चर्चा मिली है। आदिवासी-विमर्श की दृष्टि हिन्दी साहित्य में उपन्यासों की भरमार है। यह विषय एक स्वतंत्र शोध की माँग करता है।

हिन्दी कहानी में आदिवासी विमर्श -

कहानी विधा में आदिवासी कलम का कोई चर्चित कथाकार नहीं उभरा है। फिर भी वाल्टर भेंगरा के कहानी संग्रह देने का सुख एवं लौटती रेखाओं, जेम्स टोप्पो की शंख नदी भरी गेल', मंजू ज्योत्सन की 'जग गयी जमीन' महत्वपूर्ण है।

आदिवासी विमर्श न केवल आदिवासी समाज की समस्याओं को सामने लाता है, बल्कि समाज को उनके प्रति संवेदनशील दृष्टिकोण अपनाने के लिए भी प्रेरित करता है। आदिवासी समाज के अधिकारों की सुरक्षा और उनकी सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षण अत्यंत महत्वपूर्ण है। आदिवासी समाज के उत्थान के लिए उनके साथ संवाद और सहयोग की आवश्यकता है। आदिवासी समुदायी का जीवन संघर्ष और चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों से भरा हुआ है। उनके विकास और उत्थान का लिए सरकारी नितियों में बदलाव आवश्यक है।

International Conference – 2025: Developed India @ 2047
Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025
Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

आदिवासी विमर्श साहित्यिक दृष्टिकोण से बहुत ही महत्वपूर्ण है क्योंकि यह समाज के उस वर्ग की आवाज है जिसे ऐतिहासिक रूप से उपेक्षित किया गया था। आदिवासी साहित्यकारों ने अपने साहित्य के माध्यम से आदिवासी समाज की समस्याओं और संघर्षों को प्रमुखता से रखा है।

आदिवासी साहित्य न केवल सामाजिक यथार्थ का चित्रण करता है, बल्कि यह उस संघर्ष को भी सामने लाता है जिसे आदिवासी समाज ने अपनी अस्तित्व की रक्षा के लिए किया है ।आदिवासी समाज के भविष्य के निर्माण और उनकी सांस्कृतिक विरासत को संजोने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। आदिवासी साहित्य समाज में परिवर्तन लाने का एक सशक्त माध्यम है।